International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 14 Issue 10, Oct 2024,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आधुनिकीकरण में शिक्षा की भूमिका

डॉ. रेणु शर्मा
शोध पर्यवेक्षक, केशव विद्यापीठ जामड़ोली, जयपुर
लता आसनानी
शोधार्थी, शिक्षा विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

सारांश

विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के इस युग मेंवैज्ञानिकों ने जो आविष्कार किये हैं वे सभी आधुनिकीकरण का ही भाग है। शिक्षा आधुनिकीकरण का साधन है, यह आधुनिकीकरण सेप्रभावित भी होती है। आधुनिकीकरण के फलस्वरूप विषय–वस्तु,शिक्षण विधि, शिक्षण के उद्देश्य अनुशासन, शिक्षण तकनीकीआदि में परिवर्तन होता है। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में शिक्षा एक साधनके रूप में सहायक होती है तथा आधुनिकीकरण के प्रभाव स्वरूप उत्पन्न नई –नई समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत करती है।

मुख्य शब्द :–आधुनिकीकरण, आधुनिकीकरण और शिक्षा।

प्रस्तावना

आधुनिकता का अभिप्राय उस व्यवस्था से हैं जिसमें औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप कुछ ऐसे तत्व सम्मिलित हो गये हैं जो प्राचीन परम्पराओं में परिवर्तन ला रहे हैं। आधुनिकता एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था का नाम हैं, जिसमें प्राचीन परम्पराओं के स्थान पर नवीन मान्यताओं को स्थान दिया गया है।आधुनिकीकरण वैज्ञानिक प्रवृत्ति का विकास है, जब एक समाजआधुनिक होता है तो वह अंध–विश्वासों को छोड़कर अपनेसंसाधनों का प्रयोग आर्थिक विकास में करता है। कुछ विद्वानपश्चिमीकरण को आधुनिकीकरण मानते हैं। उनके अनुसार यदिकोई समाज पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति को अपना रहा है तोइसका अर्थ यह है कि उसका आधुनिकीकरण हो रहा है। कुछविद्वानों के अनुसार औद्योगीकरण और नगरीकरण हीआधुनिकीकरण है। औद्योगीकरण में श्रम विभाजन एवंविशेषीकरण के कारण मशीनों का प्रयोग से उत्पादन बड़े पैमानेपर बहुत बड़ी मात्रा में होने लगा। लोगों का गाँवों से नगरों कीतरफ आगमन हुआ, जिससे बड़े–बड़े नगरों का विकास हुआऔर उनके जीवन स्तर पर विशेष प्रभाव पड़ा। इस कारणआधुनिकीकरण का औद्योगीकरण और नगरीकरण से जोड़करदेखा जाता है ।

आधुनिक शब्द अंग्रेजी के शब्द (Modern) का हिन्दी रूपान्तर हैं जिसका अभिप्राय हैं प्रचलन या फैशन जो भी समकालीन हैं अर्थात वर्तमान समय में चलन में हैं वही आधुनिक हैं, चाहें वह अच्छा हैं अथवा बुरा, हम उसे पसन्द करते हैं अथवा नहीं।

मार्डन शब्द का प्रयोग छठी शताब्दीं में समकालीन तथा प्राचीन लेखों अथवा विषयों में अन्तर करने के लिए किया जाता था। सत्रहवीं शताब्दीं में आधुनिकता शब्द का प्रयोग सीमित तथा तकनीकी संदर्भ में किया जाने लगा।

आधुनिकीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा नये व आधुनिक मानेजाने वाले मूल्यों,व्यवहार के प्रतिमानों, ज्ञान, व्यवस्थाओं,तकनीकी आदि का प्रसार अथवा फैलाव किया जाता है।आधुनिकीकरण करने के लिए बड़ी–बड़ी इमारतों, कल–कारखानों,कार्यालयों, वैयक्तिक समूहों आदि का निर्माण कर देने मात्र सेही काम नहीं चलता। प्रमुख आवश्यकता इस बात की होती हैकि आधुनिक मूल्यों, आधुनिक जीवन का ढंग, आधुनिकआकांक्षाओं, आधुनिक ज्ञान की भूख, आधुनिक रुचियों आदि कोभी जाग्रत अथवा विकसित किया जाये।

परम्परागत समाज को आधुनिक समाज में बदलनाआधुनिकीकरण कहलाता है। आधुनिक समाज की सबसे बड़ीविशेषता उसके द्वारा विज्ञान पर आधारित शिल्प विज्ञान कोअपनाया जाना है। आधुनिक समाज, विज्ञान और तकनीकी ज्ञानके विकास पर इतना अधिक बल देता है कि उसका सामाजिकऔर सांस्कृतिक जीवन पर निश्चित रूप से प्रभाव पड़ता है औरदोनों प्रकार के जीवन में कुछ मूलभूत परिवर्तन होते हैं, इन्हींपरिवर्तनों को आधुनिकीकरण कहा जाता है। आधुनिकीकरणपरिवर्तन की प्रक्रिया है, जब समाज आधुनिक होता है तो प्राचीनव्यवस्थाओं से उसका सम्बन्ध टूटता जाता है, परन्तु इसका यहतात्पर्य नहीं होता है कि परम्परावाद और आधुनिकीकरण के बीचएक दीवार है। आधुनिकीकरण एक क्रमिक, मंद गति वाली,निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। आधुनिकीकरण एकअनुकरणात्मक प्रक्रिया नहीं है, यद्यपि सभी आधुनिकीकरण मेंकुछ न कुछ अनुकरण की मात्रा निहित होती है, यह एकगतिशीलता की प्रक्रिया है, जिसमें समाज गतिशील होता है,पुरानी व्यवस्था को छोड़कर नई तकनीक अपनाता है औरव्यवहार के नये मापदण्ड विकसित करता है।

आधुनिकता और शिक्षा

शिक्षा समाज में एक आवश्यक भूमिका निभाती है, ज्ञान का निर्माण करती है तथा विद्यार्थियों में ज्ञान का विकास करती है। बदलते विश्व की चुनौतियों का सामना करने के

लिए नागरिकों को एक खुले और न्यायपूर्ण समाज के विकास में योगदान करने में सक्षम बनाने के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण साधन है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण के अनुसार, शिक्षा व्यक्ति की व्यक्तिगत आवश्यकताओं की प्रतिक्रिया में उत्पन्न नहीं होती है, बल्कि यह उस समाज की आवश्यकताओं से उत्पन्न होती है जिसका व्यक्ति सदस्य है। एक स्थिर समाज में, शैक्षिक प्रणाली का मुख्य कार्य सांस्कृतिक विरासत को नई पीढ़ियों तक पहुंचाना है। प्राचीन काल में शिक्षा एक विशेष समूह तक ही केन्द्रित थी। लेकिन शिक्षा के आधुनिकीकरण के साथ, अब सभी की शिक्षा तक पहुंच है, चाहे उनकी जाति, धर्म, संस्कृति और आर्थिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो। इस प्रकार शिक्षा आधुनिकीकरण का एक महत्वपूर्ण साधन हो सकती है। शिक्षा के महत्व को इस तथ्य से महसूस किया जा सकता है कि सभी आधुनिक समाज शिक्षा के सार्वभौमिकरण पर जोर देते हैं।

शिक्षा व सामाजिक आधुनिकीकरण में घनिष्ठ सम्बन्ध है।सामाजिक परिवर्तन के लिए शिक्षा अत्यन्त अनिवार्य है। जब तक समाज के व्यक्ति शिक्षित नहीं होंगे, तब तक समाज में वांछितपरिवर्तन लाना सम्भव नहीं है। अनेक अध्ययनों एवं सर्वेक्षणों सेयह स्पष्ट होता है कि विकसित समाजों की विशेषता उनकीशिक्षा, उच्च स्तरीय तकनीकी का प्रयोग एवं वैज्ञानिकता काविकास है। शिक्षा की प्रक्रिया समाज में उद्देश्यपूर्णढंग सेचलती रहती है प्रत्येक समाज अपनी इच्छाओं औरआवश्यकताओं की पूर्ति शिक्षा द्वारा ही करता है। वह अपनेसदस्यों के लिए शिक्षा का स्वरूप निर्धारित करते है। समाज केबदलने पर शिक्षा का स्वरूप भी बदलता रहता है। यह चक्रकभी नहीं रूकता सदैव गतिमान रहता है। शिक्षा अपनी विविधभूमिकाओं द्वारा समाज में आधुनिकीकरण लाने का प्रयास करतीहै ।

शिक्षा नवीन विचारों एवं धारणाओं के प्रचार एवं प्रसार का एकमहत्वपूर्ण साधन है। यह लोगों को परिवर्तन ग्रहण करने के लिएमानसिक रूप से तैयार करती है तथा ऐसे वातावरण का सृजनकरती हैजिससे लोग वांछित परिवर्तनों को सरलतापूर्वक ग्रहणकरें। शिक्षा द्वारा ही समाज में लोग नये–नये विचारों, धारणाओं,कृषि एवं उत्पादन की नयी विधियाँ, रहन–सहन के नये तरीकोंको आसानी से स्वीकार कर लेते हैं। शिक्षा आधुनिकीकरण केमहत्व को स्पष्ट करके उनका प्रसार करके, उनमें उपस्थितबाधक कारकों को दूर करके परिवर्तन ग्रहण कराने में सहायतादेती है। यही कारण है कि शिक्षित वर्ग परिवर्तनों को पहलेअपनाता है और अशिक्षित वर्ग बाद में।समाज की अनेक आवश्यकतायें होती है। इन आवश्यकताओं

कोपूरा करने के लिए शिक्षा भी आधुनिकीकरण से प्रभावित होती है।उदाहरणस्वरूप प्राचीन भारत में शिक्षा धर्म प्रधान थी धीरे–धीरेशिक्षा में भौतिकवाद की प्रधानता बढ़ी। अतः वर्तमान समय मेंशिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, विद्यालय आदि मेंतेजी से परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है।

आधुनिकीकरण और शिक्षा के उद्देश्य

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में शिक्षा के अधोलिखित उद्देश्य हैं:–

- तर्कपूर्णचिन्तन का विकास
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास
- नेतृत्व के गुणों का विकास
- नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का विकास
- बौद्धिक क्षमताओं और कौशलों का विकास
- प्रजातांत्रिक नागरिकता का विकास
- सामाजिक परिवर्तन को प्रोत्साहन
- राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना का विकास

आधुनिकता में बाधाएँ

भारतीय समाज में आधुनिकता के प्रसार में निम्न बाधाएँ हैं–

- **ग्रामीण जनसंख्या**–भारत में आज भी 75 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या गांवों में रहती हैं। कई गांव आज भी संचार सेवाओं से वंचित हैं। अतः आधुनिकता का प्रचार उतनी तेजी से नहीं हो रहा हैं।
- **अशिक्षा**–भारत में अशिक्षा का साम्राज्य हैं। अशिक्षित लोग परम्पराओं को अधिक मान्यता प्रदान करते हैं। परम्पराओं के चलते आधुनिक तत्वों का प्रसार नहीं हो पाता।
- **धर्म की प्रधानता**–भारत एक धर्म प्रधान देश हैं। यहाँ के जनजीवन में 'धर्म' हर क्षेत्र में व्याप्त हैं। जन्म से लेकर मृत्यु पश्चात अनेक धार्मिक संस्कार व्यक्ति पर किये जाते हैं। अतः आधुनिकता का प्रसार तेजी से नहीं हो पाता।

- **संयुक्त परिवार**–भारतीय समाज की एक महत्वपूर्ण विशेषता संयुक्त परिवार हैं। संयुक्त परिवार में रूढ़ियों और परम्पराओं का महत्व अधिक होता हैं। ऐसी स्थिति में आधुनिकता के तत्वों का प्रसार नहीं हो पाता।
- **जातिवाद**–भारत में जातिवाद के चलते नई बातों का प्रचलन सीमित हो जाता हैं व्यक्ति अपनी जाति का हित पहले सोचता हैं, सम्पूर्ण समाज का बाद में। जातिवाद के कारण व्यवहारों का क्षेत्र सीमित हो जाता हैं।

निष्कर्ष

आधुनिकीकरण एक क्रमिक, मंद गति वाली, निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। आधनिकीकरण का प्रमुख लक्षण विज्ञान तथातकनीकी का विकास है। आधुनिकीकरण की यह अभिधारणा हैकि विज्ञान तथा तकनीकी के प्रयोग से ही मानव कल्याण है।आधुनिकीकरण की इस अभिधारणा में शिक्षा अत्यधिक सहायकसिद्ध हुई है। शिक्षा आधुनिकीकरण के लिए दर्शायें एवं वातावरणतैयार करती है। यह सामाजिक परिवर्तन व आधुनिकीकरण कीगति को तीव्र बनाती है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन वआधुनिकीकरण की सुरक्षा करती है तथा सामाजिक परिवर्तन वआधुनिकीकरण के दुष्प्रभावों को रोकती है।

सुझाव

- आधुनिकता के प्रसार के लिए आवश्यक कदम उठाए जाने चाहिए, क्योंकि ये आधुनिक समाज की स्थापना के लिए आवश्यक हैं।
- आधुनिकीकरण के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उद्योगों के विकास और विस्तार की भी आवश्यकता है, क्योंकि औद्योगीकरण इसमें योगदान देता है।
- विद्यार्थियों में राष्ट्रवाद और लोकतांत्रिक गुणों को विकसित किया जाना चाहिए, क्योंकि राष्ट्रवाद और लोकतंत्र आधुनिकीकरण से जुड़े हुए हैं।
- शिक्षा संस्थानों के साथ–साथ स्थानीय और क्षेत्रीय स्तर पर आधुनिकीकरण के बारे में संगोष्ठियों, वाद–विवाद और कार्यशालाओं का आयोजन किया जाना चाहिए, ताकि लोगों को पता चल सके कि आधुनिक व्यक्ति वह है जो आदिम और पारंपरिक प्रथाओं से दूर कार्यवाही की रेखा को अपनाता है, परिवर्तन और स्वीकार करने के लिए तत्परता दिखाता है।

संदर्भ सूची

- अग्रवाल, जे.सी. (2010). शिक्षा के दार्शनिक, सामाजिक एवं आर्थिक आधार. आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन.
- ओड, एल. के. (2004). शिक्षा की दार्शनिक एवं सामाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि. जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी.
- बिहारी लाल, रमन. (1996–97). शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत. उत्तरप्रदेश.
- भटनागर, डॉ. ए.बी. (2006). भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास. मेरठः सूर्या पब्लिकेशन.
- चौबे, सरजू प्रसाद. (2003). शिक्षा के समाज शास्त्रीय आधार. आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर.
- दुबे, श्रीकृष्णा. (2010). शिक्षा सिद्धान्त एवं आधुनिक भारत में शिक्षा. आगराः राधा प्रकाशन.
- मंगल एस.के. (2006), विद्यार्थी, अधिगम एवं संज्ञान, विजय पब्लिकेशन, लुधियाना
- पाण्डेय, डॉ.बी.बी. एवं पाण्डेय, डॉ. एस. के. (2004). भारतीय शिक्षा का इतिहास और सामयिक समस्याएँ. गोरखपुरः वसुन्धरा प्रकाशन.